अनुवाद

अर्जुन ने कहा, प्रभो ! आप परमब्रह्म, परमधाम, पावन परमतत्त्व और सनातन दिव्य पुरुष हैं। आप ही चिन्मय आदिदेव, अजन्मा और सर्वव्यापी हैं। नारद, असित, देवल, व्यास आदि सारे ऋषि आप का इस प्रकार गुण-गान करते हैं और आप स्वयं भी मुझे इस का वर्णन सुना रहे हैं।।१२-१३।।

तात्पर्य

इन दो श्लोकों में श्रीभगवान् ने आधुनिक दार्शनिक को अपनी भक्ति का सुयोग प्रदान किया है। यहाँ स्पष्ट है परतत्त्व जीवतत्त्व से भिन्न है। इस अध्याय में आए भगवद्गीता के चार प्रधान श्लोकों को सुन कर अर्जुन पूर्ण रूप से संशय-मुक्त हो गया। अतएव उसने श्रीकृष्ण को परब्रह्म स्वयं भगवान् स्वीकार कर लिया और तुरन्त उद्घोष किया, ''प्रभो ! आप परब्रह्म स्वयं भगवान् हैं।'' पूर्व में श्रीकृष्ण स्वयं भी कह आये हैं कि वे सब प्राणी-पदार्थों के आदिकारण हैं। सब देवता और मनुष्य उन पर आश्रित हैं; फिर भी वे अज्ञानवश अपने को ही परतत्त्व मानकर परमेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण से स्वतन्त्र समझ बैठते हैं। भक्तियोग से इस अज्ञान का पूर्ण रूप से निवारण हो जाता है, यह श्रीभगवान् पूर्ववर्ती श्लोक में कहा ही है। अब उनकी कृपा से अर्जुन भी वैदिक विधान के अनुरूप उन्हें परम सत्य मान रहा है। ऐसा नहीं कि श्रीकृष्ण उसके अंतरंग सखा हैं, इसलिए उन को परम सत्य भगवान् कहकर अर्जुन चाटुकारी कर रहा है। अर्जुन ने इन दो श्लोकों में जो कुछ भी कहा है, वह सब कुछ वैदिक सत्य द्वारा समर्थित है। वेदों का मन्तव्य है कि एकमात्र भगवद्भक्ति-परायण पुरुष श्रीकृष्ण के तत्त्व को समझ सकता है, दूसरा कोई नहीं। अर्जुन का एक-एक शब्द वेदों से प्रमाणित है।

केन उपनिषद्' में कथन है कि **परम् ब्रह्म** सब का आश्रय है; श्रीकृष्ण भी कह चुके हैं कि सब कुछ उन पर आश्रित है। 'मुण्डक उपनिषद्' प्रमाणित करती है कि सब के आश्रय परमेश्वर की प्राप्ति उन्हीं को होती है, जो निरन्तर उन (श्रीकृष्ण) के चिन्तन में तन्मय रहते हैं। श्रीकृष्ण का यह नित्य स्मरण भक्ति का एक प्रधान अंग है। एकमात्र कृष्णभक्ति से ही जीव स्वरूपज्ञान को प्राप्त होकर प्राकृत देह से मुक्त हो सकता है।

वेदों में परमेश्वर को **पवित्रं परमम्** कहा है। श्रीकृष्ण परम पावन हैं—यह जानने वाला सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है। भगवच्चरणारविन्द में शरणागति के बिना पापों का शोधन नहीं होता। अतएव अर्जुन का श्रीकृष्ण को 'परम पावन' कहना वेद-सम्मत है। नारद आदि सभी महापुरुषों ने इस का समर्थन किया है।

श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं; इसलिए उनके ध्यान में नित्य तन्मय रहते हुए उनसे अपने दिव्य सम्बन्ध का आस्वादन करना चाहिये। वे शारीरिक आवश्यकताओं तथा जन्म-मृत्यु से अतीत परम सत्ता हैं। अर्जुन के अतिरिक्त, सम्पूर्ण वैदिक शास्त्र, पुराण एवं इतिहास इस के प्रमाण हैं। वैदिक शास्त्रों में सर्वत्र श्रीकृष्ण का यही वर्णन है और